www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गमलों में स्वास्थ्य

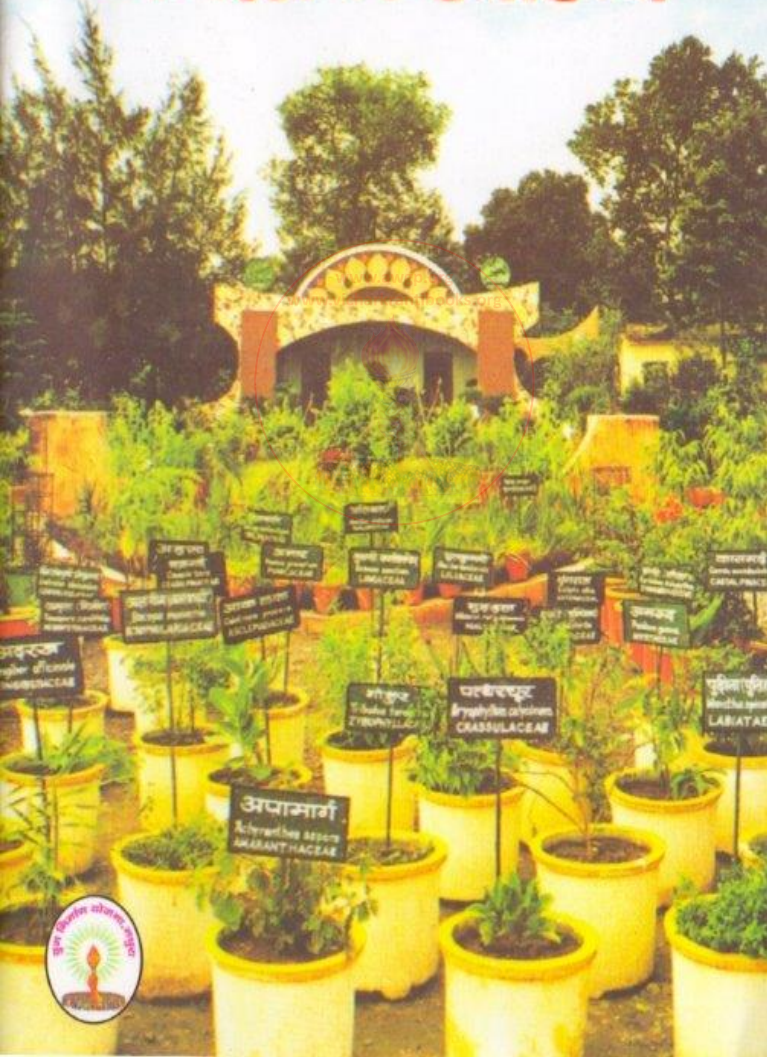

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गमलों में स्वास्थ्य

❖

संपादन
उद्यान विभाग शांतिकुंज

❖

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो० ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं० २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य : ९.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३

❖

संपादन :
उद्यान विभाग, शांतिकुंज

❖

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पुनरावृत्ति सन् २०१४

❖

मूल्य : ९.०० रुपये

❖

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान

अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय को संकल्पित शोध प्रतिष्ठान

निदेशक
डॉ० प्रणय पंड्या
एम०बी०बी०एस०, एम०डी०

शांतिकुंज हरिद्वार-२४९४११

प्रस्तावना

आयुर्वेद का पुनरुद्धार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्त्वावधान में संचालित ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान का एक अभिनव प्रयास है। ऋषि युग्म पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माताजी के सूक्ष्म संरक्षण में संचालित इस अभियान का एकमात्र उद्देश्य जनमानस को नैसर्गिक जीवन की मुख्य धारा से जोड़ना है। इस मुख्य धारा से जुड़े स्वस्थ नागरिक ही वर्तमान विभीषिकाओं से मोर्चा लेकर *'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'* के नीति वाक्यों को व्यावहारिक जीवन में चरितार्थ कर सकने में समर्थ हो पाएँगे। ऐसी स्थिति में जीवनी शक्तिवर्द्धक इस विधा से जनसामान्य का परिचित होना नितांत आवश्यक है।

हमारा ऋषितंत्र प्राचीनकाल से ही वृक्ष-वनस्पतियों में अंतर्निहित तत्त्वों के माध्यम से जनमानस को समग्र स्वास्थ्य के राजमार्ग पर अग्रसर करता रहा है। कालांतर में बृहत्तर भारत में समाविष्ट अन्यान्य संस्कृतियों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों का प्रचलन भी स्वाभाविक रूप से जनसमाज का एक अभिन्न अंग बन गया।

समाज के विकास के साथ-साथ मनुष्य की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि हुई, निदान के अत्याधुनिक उपाय भी खोज लिए गए। मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालने वाले जीवाणुओं—विषाणुओं की तत्काल पहचान कर उनके त्वरित निराकरण की पद्धतियाँ भी ढूँढ़ निकाली गयीं, परंतु स्वास्थ्य लाभ की आवेशपूर्ण जल्दबाजी ने मानव समाज को आधुनिक औषधियों का गुलाम बनाकर हमारे चिंतन में दूरगामी विवेकशीलता के अभाव का ही परिचय दिया। आज हम एक बार गंभीरतापूर्वक यह सोचने के लिए विवश हो गए हैं कि क्या इन औषधियों के दुष्प्रभाव से अकाल मृत्यु प्राप्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर रहा वर्तमान जनसमाज एवं भावी पीढ़ी के स्वास्थ्य पर लगा आसन्न ग्रहण ही हमारी नियति है।

यह एक विडंबना ही है कि समग्र स्वास्थ्य के आधार पर जिस भारतवर्ष की विशिष्टता एवं संपन्नता का आकलन संपूर्ण विश्व में ससम्मान किया जाता था और आज पुनः किया जा रहा है, आज हमने ही उस चिकित्सा पद्धति की अनुपम विधा को विस्मृत कर दिया है, उसे बौद्धिक परावलंबन ही कहा जाएगा कि चिकित्सा जगत के गौरवमय अतीत के प्रत्यक्षदर्शी रहे भारतवर्ष के चिकित्सा मनीषी आज पश्चिम की ओर आशा भरी निगाह से ताक रहे हैं। आज पश्चिम में वैकल्पिक, सर्वसुलभ एवं दोष रहित चिकित्सा पद्धति के रूप में आयुर्वेद की अपरिहार्य आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा है। अब आवश्यकता आ पड़ी है कि हम एकजुट होकर अपनी इस विज्ञान सम्मत परंपरा को पुनर्जीवित करें। यह पद्धति आर्थिक दृष्टिकोण से भी भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए उपयोगी है।

इस राष्ट्र का वनस्पति जगत समस्त विश्व को नैसर्गिक जीवनक्रम अपनाने हेतु सतत प्रेरित करता रहा है। विधाता द्वारा मानव समाज को प्रदत्त वनौषधियों का यह वरदान शारीरिक व मानसिक व्याधियों के निवारण में निर्विवाद रूप से अमृतोपम है। अतः अध्यात्म ग्रंथों में वृक्ष-वनस्पतियों को देवतुल्य मानकर इन्हें देवपुरुष की उपमा दी गयी है। उपनिषद का कथन है-

यो देवोऽग्नौ योऽप्सुयो विश्वंभुवनमाविवेश।
य ओषधीषु यो वनस्पतिषु तस्मै देवाय नमो नमः॥

-श्वेताश्तरोपनिषद् २/१७

(जो परमात्मा अग्नि में है, जल में है, समस्त लोकों में समाविष्ट है, जो सभी औषधियों एवं वनस्पतियों में विद्यमान है, उस परमात्मा को नमन है)

प्रस्तुत पुस्तक से एक ओर जहाँ जनसामान्य को वनौषधियों के बारे में जानकारी प्राप्त होगी, वहीं दूसरी ओर घर में ही गमलों में इन्हें लगाकर सस्ता और हानि रहित आरोग्य भी प्राप्त किया जा सकेगा।

*

भाद्रपद पूर्णिमा
सितंबर ६, १९९८

—डॉ० प्रणव पंड्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

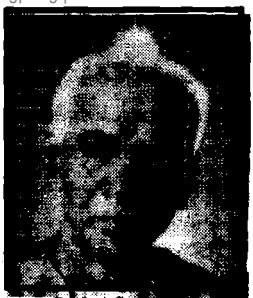

युग ऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

"अब आवश्यकता इस बात की है मनुष्य आधुनिकता के अंधे दौर में जीव-वनस्पति जगत् एवं पर्यावरण के बीच तारतम्य को नष्ट न करे, अन्यथा उसकी भौतिक प्रगति उसकी जीवन-रक्षा न कर सकेगी। इसलिए पुनः नए सिरे से उपयोगी जीवनदायी वनस्पतियों का आरोपण तथा विकास प्रक्रिया आरंभ करे। इससे दुहरा लाभ है। एक तो मनुष्य को शक्ति व सामर्थ्यों से युक्त नया जीवन मिलेगा और दूसरा वातावरण में संव्याप्त प्रदूषण की समस्या सुधरेगी। आयुर्वेद का पुनर्जीवन इस माध्यम से यदि संभव हो सके तो यह मानवता की सबसे बड़ी सेवा होगी।"

—परम पूज्य गुरुदेव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जड़ीबूटी उपचार मनुष्य के बढ़ते हुए रोगों की रोकथाम में असाधारण रूप से सहायक हो सकता है। वह निर्दोष भी है और हानिकारक प्रतिक्रिया से रहित भी। उनमें मारक गुण कम और शोधक विशेष होते हैं। वे रोगों को दबाती नहीं, वरन उखाड़ती और भगाती हैं। साथ ही सस्ती भी हैं। शाकाहारी प्रकृति वाले मानवी संरचना के अनुरूप भी। इसलिए अच्छा हो हम आहार-विहार की कृत्रिमता को पूर्णरूप से नहीं हटा सकते तो कम से कम इतना तो करें ही कि यह विज्ञान उपेक्षा के गर्त में गिरने से अपनी गुणवत्ता खो बैठा है उसे तो सुधार ही लें। यह वनस्पति चिकित्सकों का काम है कि वे इस संबंध में जो अनुपयुक्तता घुस पड़ी है, उसका संशोधन करें और उस क्षेत्र की खोई हुई गरिमा को फिर से वापस लौटाएँ।

—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अतिबला

Botanical Name : Abutilon indicum (Linn) Sw.

Family : MALVACEAE.

English Name : Indian Mallow.

हिंदी—कंघी। बंगाली-पेटारी। मराठी-मुद्रिका। पंजाबी-पीलीबूटी। गुजराती-कांसकी। कन्नड-श्रीमुद्रीगिडा। तेलगू-तुतुरुबेंड। तमिल-तुत्ति।

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति लगभग सभी गरम प्रदेशों में जंगली स्वरूप में मिलती है।

पहचान—यह क्षुप स्वरूप का झाड़ीदार पौधा है, जिसकी ऊँचाई लगभग ३-४ फुट, किंतु पुख्तावस्था में पहुँचने तक यह ६-९ फुट तक ऊँचा हो जाता है। इसके सभी अंग सफेद रुई जैसे मखमली रोम से आच्छादित रहते हैं। इसके पत्ते लंबे हृदयाकार दंतुरित किनारी वाले १-२ इंच तथा सफेद मृदुरोम से आच्छादित रहते हैं। पत्तों के वृंत लंबे तथा तल प्रदेश में पत्रों जैसे एक जोड़ी उपपत्रों की होती है। फूल पीले नारंगी रंग के जो सायंकाल में खिलते हैं। इसके फल गोल चक्राकार एवं कंघी की तरह होते हैं।

चिकित्सा में उपयोगी अंग—मूल, पत्ते, पुष्प तथा बीज। इसके मूल वातहर एवं मूत्रजनन, बीज-मृदुरेचन, कासहर, छाल-वेदनाहर एवं मूत्र जनन।

प्रयोग :—(१) मूत्रकृच्छ् (मूत्रावरोध) तथा रक्तमूत्र में—मूल का क्वाथ बनाकर पीने से लाभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(२) प्रमेह में—इसकी छाल दूध तथा चीनी में उबालकर छानकर पीने से पेशाब साफ होता है।

(३) गर्भपात रोकने के लिए—कंघी के मूल को काते हुए सूत में बाँधकर उसको स्त्री की कमर में बाँधने से गर्भपात नहीं होता।

(४) सर्पविष में—इसके मूल को चबाकर खाने से अथवा कंघी के पत्रों का स्वरस पीने से लाभ होता है।

(५) रक्त प्रदर में—कंघी के मूल को जल में घोंट कर इसमें चीनी डालकर पीने से या इसके पत्रों के रस में नागकेसर का चूर्ण डालकर पीने से प्रदर में लाभ होता है।

(६) दाहयुक्त विषमज्वर तथा कफ में—इसके मूल तथा सोंठ का काढ़ा दो-तीन दिन तक देने से लाभ होता है।

(७) मूत्रदाह बंद करने के लिए—कंघी के मूल का फांट बनाकर या इसके मूल को २०० मि० ली० जल में अच्छी तरह उबाल कर इस जल को ५०-१०० मि० ली० प्रमाण में दिन में दो बार देने से लाभ होता है।

(८) दंतशूल तथा ढीले मसूड़ों में—इसके पत्रों के क्वाथ से कुल्ला करने से लाभ होता है।

(९) व्रण तथा फोड़ों पर—इसके पुष्प तथा पत्रों को पीस कर इसे लेप करने से लाभ होता है।

(१०) नपुंसकता तथा अर्श में—इसके बीज का चूर्ण देने से लाभ होता है।

(११) पित्तातिसार में—पत्रों के रस में घी मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

मात्रा—क्वाथ :-५० मि० ली०

मूल का चूर्ण :- ३-६ मि० ग्राम

बीज चूर्ण :-४-८ मि० ग्राम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(२)

अडूसा (वासा)

Botanical Name : Adhatoda Vasica Nees.

Family : ACANTHACEAE.

English Name : Malabarnut.

हिंदी—अडूसा।

बंगाली—वासक। मराठी-अडूलसा। गुजराती-अरडुसी। तेलगू-आडासारं। मलयालम-बलिय आटलोकट्कम्। पंजाबी-भेकर। कन्नड़—आडूसोगे। तामिल-अटतौटै।

प्राप्ति स्थान—अडूसा सर्वत्र लगभग सभी प्रांतों में जंगली स्वरूप में मिलता है एवं हिमालय के निचले भागों में भी उगता हुआ देखा गया है।

पहचान—यह पौधा सफेद अडूसा तथा श्याम अडुसा दो तरह का होता है, किंतु सफेद अडूसा के पत्रों का रंग हरा होता है और उन पर सफेद हलके दाग देखे गए हैं। यह सदाहरित क्षुप जो झाड़ीदार एवं दुर्गंधयुक्त, इसकी ऊँचाई लगभग ४-८ फुट और यह समूह में उगता है। इसके पत्ते भालाकार या अंडाकार, इसके दोनों सिरे नोकीले तथा पत्तों की लंबाई ५-८ इंच तथा १.५-२.५ इंच चौड़े एवं लंबे पर्ण वृंत वाले होते हैं। इसके फूल सफेद लंबी मंजरियों में गुंथे होते हैं। सफेद पुष्प दलों पर बैंगनी रंग की दो धारियाँ होती हैं। इसमें हरे रंग के वृंत्त पत्र अधिक संख्या में होते हैं। इसके फूलों का मुख शेर जैसा होता है इसलिए इसे सिंहास्य भी कहते हैं।

चिकित्सा में उपयोगी अंग—पत्र, पुष्प एवं मूलत्वक (पुराने पौधे से)

प्रयोग :-यह औषधि कफ निःसारक, शीतवीर्य, श्वासहर, कासहर तथा क्षयघ्नगुण वाला है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(१) श्वास, कास (खांसी) कफ क्षय एवं रक्तपित्त में—अडूसा के पत्रों का रस मधु के साथ मिलाकर कुछ दिनों तक प्रतिदिन सेवन करने से उपरोक्त रोगों में लाभ होता है। इसके अतिरिक्त श्वसनी शोथ में भी लाभ होता है।

(२) कामला तथा कफपित्त ज्वर में— पत्र तथा पुष्पों का रस निकाल उसमें चीनी तथा मधु मिलाकर सेवन से कुछ दिनों में लाभ होता है।

(३) श्वास रोग में—अडूसा के पुष्प एवं पत्रों का रस गाय के मक्खन में मिलाकर तथा इसमें त्रिफला का चूर्ण डालकर सेवन करने से कुछ दिनों में श्वास रोग में लाभ होता है।

(४) खाज-खुजली में—इसके कोमल पत्रों को आंबिया हल्दी के साथ गाय के मूत्र में पीस कर इसका लेप रोगग्रस्त भाग पर करने से एवं पत्रों को जल में उबालकर इसका स्नान करने से लाभ होता है।

(५) श्वेत प्रदर—अडूसा के मूल का रस मधु में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

(६) खाँसी, यक्ष्मा तथा रक्तपित्त में—इसके पत्रों को गरम जल में थोड़ा उबालकर पत्रों को मसल कर रस निकालते हैं, इस रस में चीनी डालकर मधु जैसा गाढ़ा बनने तक गरम करते हैं, इसमें बहेड़ा एवं हल्दी का चूर्ण मिलाकर कुछ समय तक रखते हैं, इसको दिन में आठ से दस बार चाटने से लाभ होता है।

(७) गाढ़े कफ में—गरम चाय में अडुसा के पत्रों का रस, मिश्री मधु एवं रत्तिभर काला नमक मिलाकर सेवन से कफ पतला होकर निकल जाता है।

(८) शीतला का आजार न आने के लिए—अडूसा के पत्र एवं फूलों का रस मधुयेष्ठी चूर्ण मिलाकर सेवन से शीतला का आजार नहीं आता।

(९) मलेरिया ज्वर में—अडूसा के पत्रों का चूर्ण या मूलत्वक का चूर्ण प्रतिदिन १-२ माशा सेवन से लाभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(१०) संधि शोथ एवं नाड़ीशूल में—अड़ूसा के पत्रों को पीस कर इसका पोल्टिस लगाया जाए तो लाभ होता है।

मात्रा—पत्र चूर्ण १ से २ माशा

मूल त्वकचूर्ण—४ रत्ती से १ माशा

पुष्प चूर्ण—५ से १० रत्ती

क्वाथ—१-२ तोला

(३)

अपामार्ग (चिरचिरा)

Botanical Name : Achyranthes aspera Linn.
Family : AMARANTHACEAE.
English Name : Prickly-chaff Flower.

हिंदी—चिरचिरा, लटजीरा।

बंगाली—आपांग। मराठी-आघाड़ा। गुजराती-अंघेड़ी। कन्नड़-उत्तरणी। तेलगू-अपामार्गमु। तमिल-वायुरवि। मलयालम-वलियकटलाट।

प्राप्ति स्थान—यह पौधा भारत के प्रायः सभी प्रांतों में जंगली अवस्था में सभी शहरों तथा गाँवों में मिलता है।

पहचान—यह पौधा छोटे कद का क्षुप १-३ फीट ऊँचा, इसकी शाखाएँ पतली अशक्त कांड वाली, इसकी पर्व मोटी तथा कुछ फूली हुई होती हैं। इसके पत्ते गोल, अंडाकार एवं नुकीले जो लगभग ३-५ इंच लंबे होते हैं। पत्ते एवं शाखाएँ सूक्ष्म सफेद रोम से आच्छादित होते हैं। पुष्पदंड लगभग डेढ़ फुट लंबा जिस पर लाल गुलाबी पीलापन लिए फूल गूँथे रहते हैं। इसी पुष्पदंड पर काँटेदार छोटे-छोटे फल उलटे लगते हैं। यह काँटेदार फल जब कोई प्राणी उससे स्पर्श करता हुआ गुजरता है तो उसके साथ या उसके कपड़ों के साथ चिपक जाते हैं।

चिकित्सा में उपयोगी अंग :-मूल, बीज, पत्र तथा पंचांग चिकित्सा में प्रयोग करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपामार्ग औषधि—पाचन, दीपन, भोजन में रुचि उत्पन्न करने वाला रोचक होता है।

प्रयोग—(१) पंचांग का क्वाथ—भोजन से पूर्व सेवन से पाचक रस में वृद्धि होकर शूल कम होता है।

भोजनोपरांत क्वाथ का सेवन—भोजन के २-३ घंटे पश्चात पंचांग का गरम-गरम क्वाथ पीने से अम्लता कम होती है तथा श्लेष्मा का विलयन होता है, यकृत पर अच्छा प्रभाव होकर पित्तस्राव उचित मात्रा में होता है, जिस कारण पित्ताश्मरी तथा अर्श में लाभ होता है।

(२) सर्प विष, विच्छू के काटने, पागल कुत्ते के काटने, चूहे के काटने में—इसके मूल जल में पीसकर पिलाते हैं तथा पंचांग, मूल या बीज को पानी में पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है।

(३) आँख की फूली में—अपामार्ग के मूल को मधु के साथ मिलाकर इसका अंजन आँख में करने से लाभ होता है।

(४) दंतशूल में—पत्र स्वरस मसूड़ों पर मलने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त अपामार्ग की शाखा (टहनी) से दातौन करने से लाभ होता है।

(५) संधि शोथ में—इसके पत्तों को पीसकर एवं गरम कर संधिशोथ ग्रस्त भाग पर बाँधने से लाभ होता है।

(६) कंडूरोग में—अपामार्ग के पंचांग—क्वाथ से स्नान करने से कंडू रोग दूर होता है।

(४)

रक्तार्क (आक)

Botanical Name : Calotropis procera (Ait) R. Br.Linn.

Family : ASCLEPIADACEAE

English Name : Swallow Wort.

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हिंदी—मदार, आक।
बंगाली–आकंद। गुजराती–आकड़ो। तामिल–बदाबड़म। तेलगू–मंदारमु। कन्नड़–एक्क। मलयालम–एरिक्का।

प्राप्ति स्थान—यह पौधा भारत के लगभग सभी प्रांतों में पाया जाता है, किंतु उष्ण तथा शुष्क प्रदेशों में यह विशेष मात्रा में उपलब्ध है, फिर भी यह पौधा हिमालय के निचले भागों में अधिक मात्रा में उगता हुआ देखा गया है।

पहचान—आक का पौधा क्षुप स्वरूप का ६–८ फीट ऊँचा होता है। इसके सभी अंग सफेद पतले मोम जैसे स्तर से ढंके रहते हैं। इसके पत्र अंडाकार या गोल ३–६ इंच लंबे, २–३ इंच चौड़े, अवृंत। पुष्प सुगंधित एवं गुच्छ में, इसके अंतर्दल सफेद तथा ऊपर की तरफ उठे हुए होते हैं। इन दल खंडों पर के ऊपर जामुनी रंग के दाग होते हैं। फल गोल अंडाकार जबकि इसके बीज रुईदार होते हैं। प्राय: सभी भागों में सफेद दूध जैसा क्षीर निकलता है।

प्रयोज्य अंग—मूल, पत्र, पुष्प एवं क्षीर का औषध (चिकित्सा में) में उपयोग किया जाता है।

इसके मूल की छाल तिक्त, दीपन, पाचन, कफघ्न, वामक, उद्वेष्टन रोधि, बल्य एवं रसायन गुणवाली है।

प्रयोग—(१) सभी प्रकार के चर्मरोगों में—इसकी छाल को पानी में पीसकर रोगग्रस्त भागों पर लगाते हैं। जब अधिक खुजली हो तो छाल को निमोली के तेल में घिसकर लगाते हैं।

(२) कुपचन में—इसकी छाल आधी रत्ती देने से पाचन शक्ति बढ़ती है। अतिसार तथा आँव में—इसकी छाल ३०–४० रत्ती, सुगंधित पदार्थ में मिलाकर देने से लाभ होता है, इससे वमन की संभावना कम रहती है। जीर्ण ज्वर एवं विसर्गी ज्वर में—इसका फांट देने से लाभ होता है, जबकि मलेरिया ज्वर में इसकी छाल पान के साथ खिलाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुग्ध क्षीर—(१) मोच, संधिशोथ तथा मरोड़ में—आक के दुग्ध को नमक में मिलाकर लगाने से सूजन कम होती है।

(२) त्वचारोगों में तथा आमवात, दाद एवं छाजन में—दुग्ध को हल्दी तथा तिल के तेल में उबालकर मालिश करने से लाभ होता है।

पुष्पों का प्रयोग—खाँसी एवं दमा में—फूलों को राब में उबालकर सेवन से लाभ।

पत्रों का प्रयोग—(१) जीर्णव्रण : इसके पत्रों का चूर्णव्रण पर डालने से शीघ्र लाभ होता है।

(२) चोट पर—इसके पत्रों को तेल में उबाल कर इसकी मालिश करने से लाभ होता है।

(३) उदररोग—इसके पत्रों एवं सैंधव को समान भाग में लेकर बंदहांडी में गरम करके बनाई राख को तक्र के साथ देने से लाभ होता है।

बिच्छू के विष पर—आक के मूल को पानी में घिसकर लेप करने से लाभ होता है।

कर्णशूल में—आक के सूखे हुए पत्रों पर घी लगाकर आग पर सेंकने के बाद उसका रस निकाल कर कान में एक बूंद डालने से लाभ होता है।

मात्रा—मूल की छाल का चूर्ण—डेढ़ से ढाई रत्ती। दुग्ध १ से २ रत्ती। पत्र का चूर्ण २ रत्ती। फूल १-२ रत्ती।

(५)

अंतमूल

Botanical Name : Tylophora asthmatica. W&A
Family : ASCLEPIADACEAE
English Name : Indian Ipecacaunha

हिंदी—अर्कपर्णी। बंगाली-अंतोमूल। गुजराती-दमवेल। मराठी-पित्तकारी। तेलगू-वेरिपंल। मलयालम-वल्लीपाल। कन्नड़-किरुमंजि।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राप्ति स्थान—यह बेल उष्ण प्रदेश तथा रेतीले प्रदेश में अधिक मिलती है, जबकि यह बेल भारत के अन्य प्रदेश-बंगाल, उड़ीसा, दक्षिण भारत, चेन्नई, कोंकई एवं गुजरात में भी उगती देखी गई है।

पहचान—बहुवर्षीय लता स्वरूप की, इसके पत्र २-६ इंच लंबे तथा १ से २ इंच चौड़े, गोल अंडाकार, तीक्ष्णाग्र, अखंड, ऊपरी सतह चिकनी जबकि नीचली सतह रोमेश एवं भूरे रंग की, इसके फूल बहुत छोटे-छोटे हलके पीले रंग के, अंदर से बैंगनी तथा गुच्छों में। इसके फल युग्म प्रकार के २-४ इंच लंबे, अग्र की तरफ से नुकीले होते हैं। इसके मूल मांसल, लंबे, अनेक, बारीक हलके पीले रंग के तंतु, इनके टूटते ही हलके पीले रंग का गंधहीन रस निकलता है।

प्रयोज्य अंग—मूल तथा पत्र।

इसके पत्र तथा मूल कफ निःसारक, रक्तशोधक, आमपाचक।

प्रयोग—(१) संग्रहणी, अतिसार तथा रक्तातिसार में—इसका चूर्ण एक माशा तथा इसके साथ सोंठ एवं गोंद देने से लाभ होता है।

(२) कफ विकारों में—इसका चूर्ण मुलैठी के साथ देने से लाभ।

(३) वातरक्त में—इसके मूल को पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है।

(४) अजीर्ण में वमन के लिए—इसका चार इंच लंबा मूल जल में घिसकर देने से वमन होता है या पत्रों का चूर्ण १-२ माशा देने से लाभ होता है।

(५) आमवात, संधिवात एवं शरीर पीड़ा में—इसका चूर्ण १-२ माशा देने से लाभ होता है।

(२) सामान्य मात्रा में इसके सेवन से रक्त शुद्धिकरण होता है।

मात्रा—चूर्ण १-२ माशा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अदरख

Botanical Name : Gingiber Officinale Roscoe.

Family : ZINGIBERACEAE.

English Name : Zinger Root.

हिंदी—अदरख/आदी। गुजराती-आदु। पंजाबी-अदरक। बंगाली-आदी। मराठी-आले। तेलगू-अल्लमू। कन्नड़ अलल। तामिल शुक्क। मलियालम-इंची।

प्राप्ति स्थान—भारतवर्ष के प्राय: सभी प्रदेशों में अदरख की खेती की जाती है।

पहचान—अदरख का पौधा ३-४ से फीट ऊँचा होता है, इसके पत्ते लंबे बांस के पत्रों जैसे पर उनसे कुछ छोटे होते हैं। इसका कांड भूमिगत होते हुए इसमें पोषण संग्रहित होता है, जो कंद समान होकर अदरख बनता है। इसके फूल पुराने पौधों पर देखे गए हैं। जिनका रंग-जामुनी होता है। इसकी खेती करते समय रेतीले जमीन का चयन करना चाहिए तथा गोबर की खाद दुमट मिट्टी में मिलाकर अदरख की खेती अधिक होती है।

यह अग्निदीपक, रुचिकर, जिह्वा तथा कंठ का शोधन वाला।

प्रयोग—(१) श्वास रोग, कास एवं कफ रोगों में—अदरख का रस शहद के साथ मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

(२) कंठ शुद्धिकरण तथा भूख उत्तेजित करने के लिए अदरख के छोटे-छोटे टुकड़े कर उसमें सैंधव नमक मिलाकर भोजन से पूर्व सेवन करने से भोजन में रुचि बढ़ती है।

(३) उलटी तथा जी मिचलाने में—अदरख एवं प्याज का एक-एक तोला रस मिश्रित कर सेवन से लाभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(४) जलोदर रोग में—अदरख का रस तीव्र मूत्र निःसारक होता है इसलिए धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ाई जाती है, जिससे मूत्र की मात्रा भी बढ़ती है।

(५) शीतपित्त में—अदरख का रस गुड़ के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

(६) कर्णशूल में—अदरख का गुन-गुना रस कान में डालने से लाभ होता है।

(७)

अनार

Botanical Name : Punica granatum.
Family : PUNICACEAE.
English Name : Pomegranate
हिंदी—अनार (दाड़िम)।
बंगाली-दाड़िम। मराठी—डालिम्ब। कन्नड—दालिम्ब। गुजराती-दाड़म। तेलगू-दालिम्ब काया। तामिल-मादलै।

प्राप्ति स्थान—यह पौधा प्रायः सभी फल वाटिकाओं में लगाया जाता है। जबकि अफगानिस्तान तथा हिमालय में (२-३ हजार फीट तक) यह वन्य रूप में उगता देखा गया है।

पहचान—यह पौधा झाड़ीदार, अनेक शाखाओं तथा प्रशाखाओं में विभाजित होता है। प्रायः यह छोटा वृक्ष रूप में होता है। इसकी शाखाएँ एवं प्रशाखाएँ अग्र भाग पर थोड़ी नुकीली काँटेदार होती हैं। इसके पत्र १ से डेढ़ इंच लंबे आयताकार चिकने तथा छोटे वृंत वाले होते हैं। यह विपरीत या न्यूनाधिक विपरीत या समूहबंध होते हैं। पत्रों पर पारभासक सूक्ष्म छींटे होते हैं।

इसके फूल—गहरे लाल रंग के, फल—गोल एवं मोटे छिलके वाला होता है, फल के अंदर सफेद, लाल या गुलाबी रंग के असंख्य नोकदार दाने होते हैं। यह दाने सूखने पर अनारदाना बनते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयोज्य अंग—मूल की छाल, कांड की छाल, फल की छाल एवं स्वरस का उपयोग किया जाता है।

यह औषधि शीतल, रक्त शोथक, हृद्य, रोचक एवं ग्राही है।

प्रयोग—(१) छाल का प्रयोग—स्फीत कृमि में—इसके लिए ८० ग्राम छाल को डेढ़ लीटर जल में उबाल कर आधा शेष रहने पर छानकर नित्य प्रत्येक आधे घंटे के बाद चार बार खाली पेट पिलाने से तथा बाद में थोड़ा एरंडतैल देने से लाभ होता है।

अतिसार तथा संग्रहणी में—अतिसार, प्रवाहिका में फल की छाल का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है।

इसके संपूर्ण फल को जरा भूनकर, कूटकर रस निकालकर देने से अतिसार तथा प्रवाहिका में लाभ होता है।

(८)

अमरूद

Botanical Name : Psidium guajava Linn.
Family : MYRTACEAE.
English Name : Guava Tree.

हिंदी—अमरूद। मराठी—पेरु। गुजराती-जामफल।

प्राप्ति स्थान—यह वृक्ष भारत के प्राय: सभी प्रांतों में फलों की वाटिकाओं में उगाया जाता है, इसको खेतों एवं जंगलों में वन्य रूप में भी उगता देखा गया है।

पहचान—यह छोटे कद का वृक्ष, कांड की छाल सफेद, पतली, तरुण शाखाएँ चार कोने वाली, इसके पत्र अंडाकार, पत्राग्र नुकीला, इसकी दोनों सतह खुरदरी होती हैं, इसके पुष्प सफेद तथा पत्रकोण में एक पुष्प होता है। इसके फल हरे गोल या लंबगोल, रसदार स्वादिष्ट अंदर से लाल या सफेद होते हैं।

प्रयोज्य अंग—पत्र, छाल एवं फल का प्रयोग चिकित्सा में होता है। शीतल, मृदुरेचक, पौष्टिक गुणवाली औषधि।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयोग—(१) इसका फल रुचिकर तथा शुक्रवर्द्धक है, इसके अतिरिक्त तृषा शामक, हृदय को शक्ति प्रदान करता है।

(२) पत्रों का क्वाथ—आंतरोग में तथा कृमिनाशक एवं वमन शामक है।

(३) पत्रों के क्वाथ से कुल्ला करने से मसूड़ों से रक्त स्राव रुकता है तथा मुखगत व्रणों में लाभ होता है, इसको पीने से अतिसार में लाभ होता है।

(४) भांग का नशा चढ़ा हो तो इसके फल खाने से या इसके पत्रों का रस पीने से भांग का नशा उतर जाता है।

(५) ठंडक (शीतलता) के लिए शरबत—इसके फल के बीज निकाल कर इसे पीसकर इसमें गुलाबजल तथा मिश्री डालकर शरबत तैयार होता है, इसके सेवन से प्यास बुझती है तथा ठंडक मिलती है।

(९)
अमृता (गिलोय)

Botanical Name : Tinospora Cordiflolia (Wild) Miers.

Family : MENISPERMACEAE.

English Name : Tinospora.

हिंदी—गिलोय।

गुजराती—गलो। मराठी-गुलबेल। बंगाली-गुलंच। कन्नड़-अमरदवल्ली। तेलगू-तिप्पतीगे। तामिल-अमृतऽवल्ली। पंजाबी-गिलो।

प्राप्ति स्थान—यह काष्ठीय कांड वाली लता है, प्राय: जंगलों में झाड़ियों तथा वृक्षों के साथ लिपटी हुई पायी जाती है, किंतु यह लता विशेषकर उष्ण प्रांतों में अधिक मात्रा में पायी जाती है।

पहचान—यह बहुवर्षीय, काष्ठीय, चिकनी लता है जो वृक्षों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साथ लिपटी हुई फैलती है। इसकी शाखाओं से मूल डोरे के समान निकलकर जमीन की तरफ लटकते हैं। इसके पत्ते गोलाकार, हृदयाकार, चिकने, पतले एवं पत्राग्र नुकीला, पत्रों में ८ से ९ शिराएँ, १-२ इंच पर्णवृंत युक्त इसके पुराने पत्ते पीले होकर वसंत ऋतु में गिर जाते हैं और नए पत्ते ज्येष्ठ मास तक आ जाते हैं। इसी समय हरापन लिए पीले छोटे-छोटे समूह में पुष्प आते हैं। इसके फल प्रारंभ में हरे परंतु पकने पर लाल हो जाते हैं।

प्रयोज्य अंग—इसके मूल तथा कांड का प्रयोग चिकित्सा में किया जाता है।

इसके मूल तथा कांड शक्तिवर्द्धक, दीपन, मूत्र जनन, पित्तसारक, ज्वहर, गुण वाले हैं।

प्रयोग—गिलोय का फांट—गिलोय कांड के टुकड़े साफ कर इनको पीसकर इसमें से दस तोला कल्क एवं अनंत मूल का चूर्ण दस तोला इनको १०० तोला उबलते पानी में बंद पात्र में दो घंटे बंद रखें फिर मसल कर छान लें, इस फाँट का प्रयोग-कुष्ठ रोग, वातरक्त तथा जीर्ण आमवात में बहुत ही लाभदायक है। यह पौष्टिक होने के कारण इसका प्रयोग ज्वर पश्चात दौर्बल्य तथा दौर्बल्य युक्त अन्य रोगों में अतिलाभकारी है। इसके सेवन की मात्रा प्रतिदिन तीन बार १०-२० तोला।

(१) विषम ज्वर तथा शीतजीर्ण ज्वर में—इसका क्वाथ तथा इसमें छोटी पीपल एवं मधु मिलाकर देने से लाभ होता है, इसके अतिरिक्त कफ, प्लीहावृद्धि एवं अरुचि दूर होती है।

(२) प्रमेह एवं मूत्र विकारों में—गिलोय का स्वरस अधिक मात्रा में देते हैं, जिससे पाखाना साफ होता है।

प्रमेह में—इसका स्वरस तथा पाषाणभेद चूर्ण ५-८ रत्ती, मधु के साथ दिन में ३ बार सेवन करने से लाभ होता है।

(३) चर्मरोगों में (कण्डु, दाह, दाग एवं चकते)—गिलोय गुगुल के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ या कड़वी नीम या हल्दी, खदिर एवं आँवला के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

(५) अर्श में—इसका स्वरस या चूर्ण तक्र के अनुपान के साथ देने से लाभ होता है।

(६) स्तन्य शुद्धि के लिए—गिलोय का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है।

(७) विषम ज्वर में अमृत रस का प्रयोग—गिलोय का चूर्ण १०० भाग, गुड़ एवं मधु सोलह-सोलह भाग एवं २० भाग घी लेकर इकट्ठे कर, प्रमाणसह इसका सेवन करने से लाभ होता है।

(८) आमवात में—गिलोय एवं सोंठ का काढ़ा बना कर पीने से आमवात में लाभ होता है।

(९) कफ रोग में—गिलोय का क्वाथ एवं उसमें मधु मिला कर सेवन से सभी प्रकार के कफ रोगों में लाभ होता है।

(१०) हृदय शूल तथा वातशूल में—गिलोय का चूर्ण एवं काली मिर्च का चूर्ण गरम जल के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

मात्रा—चूर्ण १-३ माशा। क्वाथ ४-८ तोला। सत्व ५-१५ रत्ती।

(१०)

कंटकारी

Botanical Name : Solanum xanthocarpum Schard & Wendl
Family : SOLANACEAE
English Name : YELLOW BERRIED NIGHT SHADE

हिंदी—कटेरी। गुजराती-भोंय रींगणी। बंगाली-कंटकारी। मराठी-भुई रिंगणी। कन्नड़-नेल्ल गुल्ल। तेलगू-चल्लन मुलग। पंजाबी-कंडियारी।

प्राप्ति स्थान—भारत के प्राय: सभी प्रांतों में एवं सभी प्रकार की मिट्टी में यह पौधा पाया जाता है, जबकि रेतीले जमीन में अधिक मात्रा में उगती देखी गई है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पहचान—यह काँटेदार, बहुवर्षायु जमीन पर प्रसरने वाला क्षुप है, इसकी शाखाएँ टेढ़ी-मेढ़ी एवं अधिक संख्या में होती हैं। इसके सभी अंगों पर पीले रंग के सीधे लंबे एवं छोटे काँटे होते हैं। इसके पते पक्षवत खंडित (गहरे कटे हुए) पत्र खंड दतुरित एवं पुनः खंडित होते हैं। पत्रों पर ताराकार रोम होने के कारण इनकी सतह कुछ खुरदरी लगती है। इसके फूल गहरे नीले रंग के चक्राकार, नीले रंग के दल पुष्पों के मध्य से पीले रंग के पुंकेसर निकले होते हैं, जो आकर्षक लगते हैं। इसके फल गोल, पीले एवं चिकने होते हैं, कभी-कभी हरी धारियों वाले सफेद फल भी होते है।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—इसके ताजे मूल का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बीज तथा पत्रों का प्रयोग भी किया जाता है। यह वनौषधि ज्वरहर, मूत्रल, कफ निःसारक तथा वेदनास्थापक है।

प्रयोग—(१) मूल का क्वाथ—इसकी जड़ तथा गिलोय का क्वाथ कास तथा ज्वर में देने से लाभ होता है, क्योंकि इससे शरीर की पीड़ा कम होती है, कुछ पसीना आकर ज्वर कम होता है।

(२) मूल का क्वाथ मधु के साथ सेवन से श्वास नलिका शोथ, स्वर शोथ, एवं गला तथा श्वास नलिका की शुष्कता कम होकर कफ ढीला होता है, इसी कारण उपरोक्त रोगों में लाभ होता है।

(३) खाँसी में—पत्ररस या मूलक्वाथ में छोटी पीपल तथा मधु एवं सैंधव मिलाकर देने से लाभ होता है।

(४) तमक श्वास तथा उद्वेष्टन युक्त कास में—इसके मूल का क्वाथ और उसमें सैंधव तथा हींग मिलाकर देने से लाभ होता है।

(५) वमन में—इसके मूल का स्वरस मधु में मिलाकर देने से वमन बंद होता है।

(६) अश्मरी, मूत्रकृच्छ् तथा जलोदर में—इसके मूल का चूर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वृहती के चूर्ण के साथ मिलाकर दही के साथ सात दिन तक पीने से अश्मरी में लाभ होता है।

(७) कृमिजन्य दंतशूल में—इसके बीज का धूम्रपान करने से दंतशूल में तुरंत लाभ होता है।

(८) आमवात में—इसके पत्रों के स्वरस में कालीमिर्च मिलाकर सेवन करने से तथा पत्तों का लेप करने से लाभ होता है।

(९) गले की सूजन में—फलों का स्वरस देने से लाभ होता है।

(११)
कासमर्द (कसौंदी)

Botanical Name : Cassia Occidentalis Linn.

Family : CAESALPINACEAE.

English Name : The Negro Coffee.

हिंदी—कसोंदी। गुजराती-कासोंदरी। मराठी-कासविंदा। बंगाली-कालका सुन्दा। कन्नड़-डोडूतगचे। तेलगू-कसिं। मलयालम-पोन्नाबीर। तमिल-पैदाविरै।

प्राप्ति स्थान—भारत के प्राय: सभी प्रांतों में जंगली स्वरूप में वर्षा ऋतु के पश्चात सड़क के किनारों के गंदे कूड़ाकरकट में उगती है।

पहचान—यह वनस्पति ३-४ फीट ऊँची क्षुप स्वरूप की जो वर्षा ऋतु में अधिक मात्रा में होती है। यह वनस्पति चक्रमर्द से थोड़ा कम दुर्गंध वाली होती है। इसका कांड कुछ नालीदार होता है। इसके पत्र संयुक्त, ६-१२ इंच लंबे, प्रत्येक संयुक्त पत्र में ९-११ पत्रक एवं वृंत के आधार पर एक ग्रंथि होती है। पत्रक डेढ़ से चार इंच लंबे मुलायम तथा अग्र भाग से नोकदार। इसकी फलियाँ ४-६ इंच लंबी तथा चिपटी होती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चिकित्सा में—मूल, पत्र तथा बीज का प्रयोग किया जाता है। इसके बीज को भूनकर इसका प्रयोग काफी की तरह व्यवहार में लाते हैं। इसके मूल-मूत्र जनन, पंचांग—विरेचन तथा बीज एवं पत्र ज्वरहर हैं। कंठ शोधन, कफघ्न तथा कुष्ठघ्न हैं।

प्रयोग—(१) कफ ज्वर एवं श्वास रोग में—इसके पत्रों का स्वरस मधु के साथ मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है, इससे वमन तथा विरेचन भी होता है।

(२) व्रण शोथ तथा दाह युक्त चर्म रोगों में—इसके ताजे पत्रों को पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है।

(३) त्वचा के रोगों में—पत्रों तथा मूल का क्वाथ पीने से लाभ होता है, इसके अतिरिक्त मूल एवं पत्रों को पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

(४) दद्रु त्वचा रोग में—इसके मूल को जल में घिसकर रोगग्रस्त भाग पर लगाने से लाभ होता है।

(५) श्वास रोग में—पत्रों का क्वाथ पीने से इसमे लाभ होता है।

(६) शीघ्र प्रसूति होने के लिए—इसके पत्रों का स्वरस देने से शीघ्र प्रसूति होती है।

(७) नेत्र रोग में—(आँखों के दुखने) इसके पत्रों का रस निकाल कर आँख में एक बूँद डालने तथा आँखों पर पत्रों को बाँधने से केवल एक सप्ताह में आराम मिलता है।

(१२)

गुड़हल (जपा)

Botanical Name : Hibiscus rosa-sinensis Linn.

Family : MALVACEAE.

English Name : Shoe Flower.

हिंदी—गुड़हल। गुजराती-जासूद। मराठी-जासूबद। बंगाली-जबाफुल। तेलगू-दासनमु। तामिल-शष्पातुष्पु। कन्नड़-दासणिगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति भारत के सभी प्रांतों के उद्यानों में लगायी जाती है। इसके पुष्प अति आकर्षक होने के कारण उद्यान की शोभा बढाते हैं।

पहचान—गुड़हल का पौधा सदाहरित छोटा गुल्म जो काष्टीय, आकर्षक, ६-८ फीट ऊँचा होता है, इसके पत्र चमकीले गहरे या हल्के हरे रंग के अंडाकार, पत्र किनारी दंतुरित। इसके पुष्प पत्रकोण में एक की संख्या में, लाल आकर्षक बड़े, लगभग ६ इंच व्यास के, पुष्पदल से बाहर निकले हुए जननांग। इसके पुष्प विविधता लिए हुए-इकहरे, दोहरे, लाल-पीले, सफेद एवं नारंगी रंग के फूल पौधों पर हमेशा खिले रहते हैं।

चिकित्सा में उपयोगी अंग—इसके पुष्प कलिका एवं मूल की छाल का प्रयोग किया जाता है।

इस उपयोगी अंग रक्त संग्राहक, हृद्य, मेधा, बल्य, प्रमेह, प्रदर एवं ज्वर में इसका प्रयोग किया जाता है।

प्रयोग—(१) गंजापन दूर करने के लिए-काली गाय के मूत्र में गुड़हल के फूलों को पीसकर इसका लेप करने से बाल बढ़ते हैं तथा गंजापन दूर होता है। इसके अतिरिक्त गुड़हल के ताजे पुष्पों को पीस कर बालों पर लेप करने से बाल सुंदर होकर बढ़ते हैं।

(२) प्रदर में—इसके१०-१२ फूलों को दूध में पीसकर दूध के साथ पीने से प्रदर अच्छा होता है।

(३) गुड़हल का शरबत—यह हृदय तथा मस्तिष्क की दुर्बलता को दूर कर उन्माद तथा पैत्तिक ज्वर में लाभकारी होता है।

(४) मुँह के छालों में—इसके फूलों को चबाने से मुँह के छालों को आराम मिलता है।

(५) खाँसी में—इसकी जड़ का क्वाथ बनाकर देने से लाभ होता है।

मात्रा में—पुष्प ३-६ माशा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(१३)

गोक्षुर (गोखरू)

Botanical Name : Tribulus terrestris Linn.

Family : ZYGOPHYLLACEAE..

English Name : Small Caltrops.

हिंदी—छोटा गोखरु

गुजराती—न्हाना गोखरु। मराठी–काटे गोखरु। बंगाली–गोखुरी। तेलगू–पल्लेरु मुल्ल। तामिल–नेरिंजिल। पंजाबी–भखड़ा। कन्नड़–नेगलू।

प्राप्ति स्थान—यह वनौषधि भारत के प्राय: सभी प्रदेशों में पायी जाती है। यह उष्ण प्रदेशों में (बंगाल, बिहार, तामिलनाडु, उत्तर प्रदेश, गुजरात, राजस्थान) में अधिक मात्रा में पायी जाती है।

पहचान—यह वनौषधि छोटे स्वरूप की भूमि पर पसरी होती है, यह जमीन पर लगभग २–४ फीट के घेरे में फैली रहती है। इसके मूल लंबे पतले तथा चीमड़ प्रकार के गोल हल्के भूरे रंग के होते हैं। यह थोड़े अंश में सुगंधिपन लिए कुछ मिठास वाले होते हैं। इसकी शाखाएँ जमीन पर फैली हुई १–२ फीट लंबी, रोमेश वाली होती हैं। इसके पत्र डेढ़ इंच लंबे एवं जोड़ी में होते हैं। इसके पीले रंग के पुष्प छोटे–छोटे, पत्र कोणों में होते हैं। इसके फल भी छोटे–छोटे गोल अथवा कई बार चिपटे भी होते हैं। इन पर पाँच जोड़े बड़े काँटे होते हैं। इसके फल में पाँच दल होते हैं, सूखने पर पाँचों दल त्रिकोणाकार पृथक हो जाते हैं। प्रत्येक दल में अनेक बीज पाए जाते हैं।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—मूल एवं फल।

प्रयोग—यह मधुरस युक्त, बलकारक, अग्निदीपक, वेदना स्थापन एवं पुष्टिकारक हैं। इसके अतिरिक्त यह वनौषधि गुर्दों को उत्तेजित करने वाली तथा अधिक मात्रा में सेवन से शौच साफ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(१) इसका प्रयोग—फलों का फाँट—गुर्दे के विकारों में अश्मरी एवं वातरक्त में तथा मूत्रल औषधि के रूप में बहुत ही उपयोगी है।
(२) फलों का फाँट—मूत्र घात, कास एवं हृदयविकारों में भी बहुत उपयोगी है।
(३) इसका क्वाथ—सोजाक एवं बस्तिशोध में प्रयोग किया जाता है।
(४) अश्मरी में—इसका चूर्ण मधु के साथ सेवन कर ऊपर से बकरी का दूध सात दिन पीने से अश्मरी में लाभ होता है।
(५) इसका चूर्ण एवं तिलका चूर्ण (समभाग) मधु के साथ एवं बकरी दूध के सेवन से गर्भाशय शुद्ध होकर बंध्यत्व नष्ट होता है।

(१४)

घृतकुमारी

Botanical Name : Aloebarabadensis Mill.
Family : LILIACEAE.
English Name : CommonIndian Aloe.
हिंदी—ग्वार पाठा, घी कुआंरी।
बंगाली-मोषब्बर। गुजराती-ग्वारपाठु। मराठी-कालाबोल।
प्राप्ति स्थान—यह पौधा भारतवर्ष के प्राय: सभी प्रांतों में होता है, किंतु उष्ण प्रदेशों में अधिक मात्रा में उगता देखा गया है।
पहचान—यह पौधा १-२ फीट ऊँचा जो छोटा क्षुप बहुवर्षायु एवं मांसल होता है। इसका कांड भूमिगत जिसके अग्रभाग से मांसल भालाकार, मोटे, हरे सीधे फैले हुए पत्रक निकलते हैं, यह पत्ते एक-दो फीट लंबे एवं चार इंच चौड़े तथा पत्रों की किनारियाँ दंतुरित होती हैं। इन पत्रों के अंदर घी के समान हलके पीले रंग का गूदा रहता है। भूमिगत कांड के अग्रभाग पर पत्रों के बीच से लंबा पुष्प दंड निकलता है, जिस पर लाल रंग के पुष्प होते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयोज्य अंग—पत्रों से प्राप्त पीले रंग का पिच्छिल रस। इसका रस गाढ़ा कर (सूर्यताप से या हलकी आँच पर रस को गरम करके बनाया जाता है, जिसे एलुआ कहते हैं।) के शीतल होने के बाद जम जाता है। यह चिकिना तथा अपारदर्शक बनता है, जिसे यकृताभ एलुवा कहते हैं। पारदर्शक एलुवा: तीव्र आँच पर रस को गरम कर बनाया जाता है, यह पारदर्शक बनता है इसलिए इसे ग्लासी एलुवा कहते हैं। एलुवा दीपन, पाचन, शक्तिवर्द्धक, शोथहर तथा व्रणरोपक।

प्रयोग—(१) विबंध, गुल्म, पांडु तथा पाचन विकारों में—इसके रस में सैंधव तथा हल्दी के साथ मिलाकर सेवन करने से इनमें लाभ होता है।

(२) अनार्त्तव पांडु तथा विबंध (स्त्रियों के विकार)—इसका रस १-२ तोला सैंधव एवं हल्दी के साथ मिलाकर देने से लाभ होता है।

(३) स्तन शोथ, नेत्राभिष्यंद, चर्मविकार, अर्श तथा व्रण में—इसके स्वरस को हल्दी में मिलाकर इसका वाह्य लेप करने से शोथ एवं दाह कम होता है।

(४) सूत्र कृमि में—एलुवा की बस्ति का सेवन करने से सूत्रकृमि बाहर निकल आते हैं।

(५) खाँसी में—इसके पत्रों को गरम कर इसका रस, अडुसा का रस तथा मधु और लौंग का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से खाँसी कम होकर लाभ होता है।

(६) कामला रोग में—घृतकुमारी के कंद के रस में घी डालकर नस्य करने से पीली आँखें ठीक हो जाती हैं।

(७) स्तन रोगों में—इसके कंद को घिसकर उसमें हल्दी डालकर इसका लेप स्तन पर करने से लाभ।

मात्रा : स्वरस—१-२ तोला, एलुवा १-२ रत्ती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तुलसी (काली/सफेद)

Botanical Name : Ocimum sanctum Linn.

Family : LAMIACEAE.

English Name : Holy Basil.

हिंदी—श्याम तुलसी, सफेद तुलसी।

गुजराती-तुलसी। मराठी-तुलस। तामील-तुलशी। तेलगू-गग्गेर चेट्टु। कन्नड़-एरेड तुलसी।

तुलसी (ओसीमम सेन्कटम) के दो भेद—सफेद एवं काली तुलसी। पौधे के रंग में ही भेद है, सफेद तुलसी का पौधा हरा होता है, जबकि शाम (काली) तुलसी का पौधा श्याम वर्ण लिए हुए होता है, किंतु दोनों ही भेद में गुण समान होते हैं।

प्राप्ति स्थान—यह पौधे प्रायः भारत के सभी प्रांतों में अपने आप ही उगते देखे जाते हैं, वाटिकाओं तथा उपवनों में एवं उष्ण प्रदेशों में अधिक मात्रा में पायी जाती है।

पहचान—यह पौधा क्षुप जाति का जिसकी ऊँचाई लगभग एक से डेढ़ फीट तक होती है। यह पवित्र मानी जाने वाली वनस्पति है, इसी कारण यह घरों में गमलों में लगाई जाती है। समस्त पौधे से तीव्र गंध आती है। इसकी शाखाएँ सीधी एवं फैली रहती हैं। इसके पत्ते सुगंधित, अंडाकार एवं १-२ इंच तक लंबे होते हैं। इसके पुष्प सफेद तथा हरे चक्रों में, जबकि शाम तुलसी के पुष्प शाम चक्रों में, पुष्प शाखाओं के अग्रभाग में मंजरी में गठित होते हैं। सफेद तुलसी के पत्र हरे किंतु शाम तुलसी के पत्र एवं पत्रदंड कालापन लिए होते हैं। इसके पत्र तथा बीज का उपयोग चिकित्सा में किया जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसके पत्रों में उड़नशील तैल पाया जाता है, जो उत्तम कफ निःसारक एवं प्रतिदूषक है। तुलसी के पत्र तथा उसका स्वरस शीतहर, वातहर, दीपन कृमिघ्न एवं दुर्गंधनाशक गुण वाले हैं।

औषधि का प्रयोग—इसका उपयोग कास—खाँसी, श्वास रोग, विषम ज्वर, पार्श्वशूल, विष विकार तथा पाचन विकारों में लाभकारी सिद्ध हुआ है।

(१) पत्रों का स्वरस कर्णशूल में—१ से २ बूँद डालने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त बाह्य प्रयोग व्रण प्रक्षालन, कीटदंश तथा चर्मरोगों में लाभकारी।

(२) तुलसी की चाय बनाकर सेवन—एक तोला तुलसी के पत्र २५० मिली० पानी में डालकर उबालने चाहिए; जब पानी जलकर १०० या ७५ मिली० रह जाए तब छानकर पीना चाहिए; जिससे ज्वर, अरुचि, दाह, वात विकार तथा पित्त एवं आलस्य दूर होता है। उपर्युक्त विधि से तैयार जल में इतने ही प्रमाण में दूध, दो तोला मिश्री, दो से तीन इलायची का चूर्ण डालकर काढ़ा बनाया जाता है, इसका सेवन करने से उत्तम पुष्टता प्राप्त होती है, मुँह में स्वाद आता है यह अनेक गुण वाली श्रेष्ठ औषधि है। इसलिए तुलसी की चाय प्रतिदिन पीने से लाभ होता है।

(३) विषम ज्वर में—शाम तुलसी के पत्रों के रस में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

(४) रक्तातिसार में—तुलसी के बीज रात को जल में भिगोकर प्रातः इनको पीसकर सेवन से लाभ होता है।

(५) बच्चों का वमन तथा अतिसार में—शाम या सफेद तुलसी के बीज को पीसकर गाय के दूध में मिलाकर सेवन से लाभ।

(६) दद्रु-खाज-खुजली में—तुलसी के पत्रों को लाल मिट्टी में पीसकर इसका लेप रोगग्रस्त भाग पर करने से लाभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(७) रात्रि अंधता में—काली तुलसी के पत्रों का रस १४ दिन तक प्रतिदिन दो-दो बूँद आँख में डालने से लाभ होता है।

(८) वात-शोथ में—तुलसी के रस में काली मिर्च का चूर्ण तथा घी डालकर सेवन से लाभ होता है।

(१६)

दुग्धिका (दुद्धी)

Botanical Name : Euphorbia hirta. Linn.
Family : EUPHORBIACEAE.
English Name : Milk Weed
हिंदी—दूधी।
गुजराती-राती दुधेली। मराठी-मीठी नायटी। बंगाली-वरा। तेलगू-ननपाल। तामिल-अमूपच्छै अरिस्सि।

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति भारत के लगभग सभी प्रांतों में जंगली अवस्था में तथा सभी स्थानों में भूमि पर प्रसरी रूप में होती है। विशेषत: उष्ण प्रदेशों में होती हैं।

पहचान—यह वनस्पति वर्षायु, भू प्रसारीय इसकी शाखाएँ २ फीट लंबी एवं कुछ ऊपरी उठी हुई खड़ी होती हैं। इसके प्राय: सभी अंग रोमेश तथा शाखाएँ रक्तवर्णी या हरित वर्णी होती हैं। इसके पत्ते छोटे-बड़े अंडाकार, किनारी दंतुर, अग्र तीक्ष्ण या संकुचित ३/४ से डेढ़ इंच लंबे, इसके पुष्प छोटे हरित रंग के गुच्छे में होते हैं। इसके अंगों को तोड़ने से सफेद दुग्ध निकलता है।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—पंचांग का प्रयोग किया जाता है। इस पौधे में पुष्प एवं फल आने पर इसे सुखाकर प्रयोग किया जाता है। इस वनौषधि का प्रयोग अल्प मात्रा में जल के साथ भोजन के पश्चात करना ही उचित माना गया है। यह वातकारक, मल का निवारण करने वाली तथा मूत्र प्रवर्तन करने वाली है। इसके अतिरिक्त कफ, क्रिमी तथा कुष्ठ नाशक वनौषधि है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयोग—(१) जीर्ण कफ विकारों तथा तमक श्वास में—इसके पंचांग का क्वाथ तथा इसके साथ अन्य कफ नि:सारक औषधि मिलाकर देने से लाभ होता है।

(२) रक्तयुक्त आँव तथा शूल में—पंचांग का स्वरस देने से लाभ होता है।

(३) बच्चों के क्रिमी, उदर विकारों तथा कफ विकारों में—ताजे पंचांग का स्वरस (अल्पमात्रा) जल में मिलाकर अल्पमात्रा में सेवन करने से लाभ होता है।

(४) स्तन्यवद्धर्क के रूप में—इसके ताजे पंचांग का स्वरस (अल्पमात्रा) में जल में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

(५) चर्म कील एवं दद्रु पर—इसके दुग्ध का लेप करने से चर्मकील गिर जाते हैं तथा दद्रु पर लाभ होता है।

(६) मुबारकीय रोग में (बच्चों को दूध पीने से दुध की चिकनाई इकट्ठी होकर मल की गाँठ बनती है) इसके मूल को गाय के ताजा दूध में घिसकर अल्प मात्रा में दो से तीन दिन तक सेवन से यह गण्ड मलद्वार से बाहर निकल जाती है तथा बच्चों को आराम मिलता है।

मात्रा—स्वरस १०-२० बूँद, शुष्कचूर्ण २-५ रत्ती।

(१७)

नील शंखपुष्पी (विष्णुक्रांता)

Botanical Name : Evolvulus alsinoides Linn.

Family : CONVOLVULACEAE.

English Name : Blue Shankh Pushpi

हिंदी—शंखावली। गुजराती-भूरी शंखावली। मराठी-सांखवेल।

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति भारत के लगभग सभी प्रांतों में जंगली स्वरूप में विशेषत: उष्ण प्रदेशों में भूमि प्रसारी होती है।

पहचान—यह वनस्पति छोटी, पतली शाखाओं वाली भूप्रसरी सुंदर एक वर्षायु होती है, वर्षा ऋतु में अधिक मात्रा में किंतु शीतऋतु तक यह देखी जाती है। इसके मूल के ऊपर से पतली शाखाएँ रोमयुक्त,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शाखाएँ ५-१५ इंच लंबी, इसके पत्र छोटे अखंड, अंडाकार ०.२५ से ०.५ इंच लंबे जो मुलायम श्वेत रोमों से युक्त होते हैं। पुष्प नील रंग के, पतले दंड के अग्र भाग पर २-३ की संख्या में होते हैं।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—पंचांग का प्रयोग किया जाता है।

यह मेध्य, बल्य एवं दीपन, इसका प्रयोग मानस रोग, उन्माद, अपस्मार, अनिद्रा एवं भ्रम में किया जाता है।

प्रयोग—(१) उन्माद में—ताजी २-४ तोला शंखावली के स्वरस के सेवन से दस्त साफ होकर मद उतर जाता है।

(२) ज्वर में निद्रा के लिए—इसके पंचांग को जीरक के साथ दूध में पीसकर सेवन से लाभ होता है।

(३) जीर्णकास तथा श्वास रोग में—इसके पत्रों का धूम्रपान करने से खाँसी तथा श्वास रोग में लाभ होता है।

(४) रक्त स्राव रक्तवमन में—इसके पंचांग का स्वरस मधु के साथ देने से लाभ होता है।

(५) मूत्रकृच्छ्र तथा शुक्र दौर्बल्य—पंचांग का स्वरस पीने से लाभ होता है।

(६) गर्भ दौबल्र्य में—जब गर्भधारण नहीं होता तब इसका स्वरस देने से लाभ होता है।

(७) अपस्मार तथा उन्माद में—पंचांग के स्वरस में मधु डालकर देने से लाभ होता है।

मात्रा—स्वरस : २-४ तोला, चूर्ण : ३-६ माशा, फांट : ४-८ तोला।

(१८)

बड़ी लोणा

Botanical Name : Portulaca oleracea.
Family : PORTULACACEAE.
English Name : Garden Purslane.

हिंदी—लोणाशाक (कुल्फा)। गुजराती-मोटी लुणी। मराठी-घोल। बंगाली-बड़गुनी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति वन्यरूप होती है, जो प्राय: सभी प्रांतों एवं स्थानों पर भूमि पर फैली हुई होती है, यह विशेषत: वर्षा ऋतु में अधिक मात्रा में देखी जाती है।

पहचान—यह छोटा पौधा जो शाक के रूप में भूमि पर प्रसरी अवस्था में देखा जाता है, इसके पत्ते चम्मच आकार के, गोल खंडिवाग्र वाले आधे से डेढ़ इंच लंबे होते हैं तथा थोड़े अंश में मांसल होते हैं। इसके पुष्प छोटे, पत्रकोण में पीले रंग के होते हैं। इसके पत्र चखने में खट्टे होते तथा इसका शाक बनाकर खाते हैं।
चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—पंचांग पत्र एवं बीज का प्रयोग किया जाता है।

इसके पत्र शीतल शोथहर एवं रक्त शोधक गुण वाले होते हैं। इसके बीजमूत्र जनन तथा कृमिघ्न होते हैं।

(१) **वृक्क शोथ**—इसमें पत्रों का शाक बनाकर सेवन करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त बीज का सेवन भी किया जाता है।

(२) **रक्त पित्त एवं ज्वर में**—पत्रों का स्वरस देने से सभी प्रकार के रक्त पित्त में लाभ होता है।

(३) **अर्श में**—पत्रों का शाक बनाकर देने से इसमें लाभ होता है।

(४) **मोच, चोट, सूजन तथा हाथ-पैर की जलन में**—इसके ताजा पत्रों को पीस इस पर बाँधने से लाभ होता है।

(५) **दाह तथा शोथ में**—इसके पंचांग को पीसकर बाँधने से दाह एवं शोथ कम होता है।

(६) **मूत्रशोथ तथा बार-बार थोड़ा पेशाब होना**—इसके पत्रों का रस निकाल कर उसमें मिश्री का चूर्ण मिलाकर प्रात: एवं सायं दिन में दो बार तीन दिन तक सेवन करने से लाभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(१९)
भुईं आँमला

Botanical Name : Phyllanthus niruri Linn.
Family : EUPHORBIACEAE.
English Name : Bhui Anvala
हिंदी—भुँई आँवला।
गुजराती-भोंय आंवली। बंगाली-भुँई आम्ला। कन्नड़-किरुनेल्लि। तेलगू-नेलवुसरी। मराठी। भुँई आँवली।

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति भारत के प्राय: सभी प्रांतों में जंगली स्वरूप में पायी जाती है, किंतु वर्षा ऋतु में यह अधिक मात्रा में सभी स्थानों पर उगती देखी जा सकती है।

पहचान—यह वनौषधि क्षुप स्वरूप की, छोटे कद की लगभग ६-१२ इंच तक ऊँची होती है। इसकी शाखाएँ पतली जिन पर पक्षवत प्रकार के पत्र होते हैं, यह पत्र छोटे दंड वाले आधे से तीन चौथाई इंच कद के जो इमली के पत्तों की तरह दिखाई देते हैं। इसी कारण इसे भुँई आँमला नाम दिया गया है। पुष्प छोटे कद के हरे-सफेद जो पत्र के कोण में २-३ की संख्या में होते हैं। इसके फल गोल एवं दिखने में आँवला का छोटा रूप लगते हैं।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—पंचांग पत्र तथा मूल। इसका पंचांग कासहर, श्वासहर, मूत्र जनन, दाह शामक, शोथहर, व्रणरोपण तथा नियत कालिक ज्वर प्रतिबंधक है।

(१) मलेरिया ज्वर में—इसके पंचांग का क्वाथ पीने से मलेरिया ज्वर में लाभ होता है।

(२) मूत्र विकारों में—इसके पंचांग का क्वाथ पीने से मूत्र की मात्रा बढ़ती है तथा जलन कम होती है।

(३) कामला रोग में (जौन्डिस)—इसके १ तोला मूल को दूध में पीसकर इसका सेवन प्रात: एवं सायं करने से लाभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(४) आँव में—इसके कोमल कांड का फांट बनाकर पीने से लाभ होता है।

(५) व्रण तथा व्रण शोथ पर—इसके पंचांग को चावल के पेया के साथ बनाकर पोल्टिस बाँधने से लाभ होता है।

(६) चर्मरोगों में—किसी भी प्रकार के चर्मरोग में इसके पत्रों को नमक के साथ पीसकर लगाने से लाभ होता है।

(७) प्रदर में—इसके मूल को चावल पेया में पीसकर रस निकाल कर उसमें घी डालकर तीन दिन तक सेवन करने से दु:खदायी प्रदर का नाश होता है।

(८) प्रमेह में—इसका पंचांग, दालचीनी, तमालपत्र तथा २० कालीमिर्च के बीज एवं बड़ी इलायची सबको इकट्ठा पीसकर इसका सेवन सात दिन तक करने से असाध्य प्रमेह का नाश होता है।

(९) खाँसी तथा शूल में—इसके पत्र एवं अनार के पत्रों को समप्रमाण में लेकर पानी में भिगोकर रातभर रखने के बाद प्रात: पत्रों को एक साथ मसल कर इसमें कौड़ी की भस्म मिलाकर इस रस का सेवन प्रात: एवं सायँ सात दिन तक करने लाभ होता है।

मात्रा : स्वरस-१-२ तोला, चूर्ण : ३-६ माशा।

(२०)

भृंगराज (भांगरा)

Botanical Name : Eclipta alba. Hassk.

Family : ASTERACEAE (COMPOSITAE)

English Name : Teriling Eclipata

हिंदी—भांगरा। गुजराती-भांगरो। मराठी-माका। बंगाली-भीमराज। कन्नड़-गर्ग। तेलगू-लगरा। तामिल-करीश लकन्नी।

प्राप्ति स्थान—भृंगराज के प्राय: तीन भेद पाए जाते हैं—कृष्ण, श्वेत एवं पीत। किंतु श्वेत भांगरा भारत के लगभग सभी प्रांतों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में पाया जाता है जबकि पीत भांगरा बंगाल, आसाम, कोंकण तथा तामिलनाडु में पाया जाता है, इसका बोटनीकल नाम बेडेलिया कैलेन्डुलेसीया है। जो इसी कुल की प्रजाति है। श्वेत भांगरा पहाड़ों पर ६००० फीट की ऊँचाई तक उगता पाया गया है।

पहचान—यह पौधा क्षुप तथा भूप्रसारी है जो प्रायः भूमि पर फैला रहता है, किंतु इसकी शाखाएँ भूमि से उठी हुई होती हैं, जो खुरदरी तथा इसके पर्व पर से सफेद मूल निकलते हैं। इसके पर्व पर से पत्र विपरीत लगभग २ इंच लंबे तथा आधा इंच चौड़े होते हैं। इसके विपरीत पत्र छोटे-बड़े कद के होते हैं, प्रायः अंडाकार तथा नुकीले होते हैं। पुष्प सफेद जो समूह में छोटे-छोटे मुंडको में होते हैं।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—पंचांग एवं इसका स्वरस। इसका स्वरस दीपन, पाचन, वातहर, त्वक् दोषहर, केश्य तथा वर्ण्य है।

प्रयोग—(१) जीर्ण चर्मरोग में—(कंडु, व्रण, कुष्ठ, बाल गिरने) इसके पंचांग को पीसकर इसका लेप करने एवं इसका स्वरस पीने से लाभ होता है।

(२) बाल काला करने तथा बाल बढ़ाने के लिए—इसके पंचांग का रस काशिश के साथ मिलाकर बालों पर लेप करने से लाभ होता है।

(३) अग्निदग्ध व्रण पर—भृंगराज के पत्र, मरवा तथा मेंहदी के पत्रों को एकसाथ पीसकर लेप से जलन दूर होती है एवं व्रण का दाग मिट जाता है।

(४) केश्य में, शिरःशूल तथा दृष्टि मांद्य में—भृंगराज के पत्रों से सिद्ध तैल का नस्य लेने एवं बालों में लगाने से लाभ होता है।

(५) छोटे बच्चों की खाँसी तथा गले में घरघराहट—पत्रों का स्वरस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मधु के साथ मिलाकर १ से २ बूँद एक बार में प्रतिदिन तीन बार देने से लाभ होता है।

(६) कोलेरा—(विसूचिका) में—पंचांग के रस में सैंधव मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

(७) मुखगत रोगों में—भृंगराज के पत्रों को मुँह में रखकर बार-बार चबाते रहना तथा उसके रस को थूक देने से लाभ होता है।

(८) अग्निमांद्य तथा पांडुरोग में—मूल सहित भृंगराज को छाया में सुखाकर इसका चूर्ण तथा इतना ही मिश्री चूर्ण मिलाकर प्रतिदिन चार तोला इस मिश्रण का सेवन पानी के साथ करने से लाभ होता है।

(९) स्वर भेद में—पंचांग का स्वरस तथा घी दोनों को मिलाकर, उबालकर छान लेने के बाद सेवन करने से लाभ होता है।

मात्रा :-स्वरस—आधा से एक तोला। बीज—एक से तीन माशा।

(२१)

मोगरा (मोतिया)

Botanical Name : Jasminum samboc, Ait.

Family : OLEACEAE.

English Name : Jasmine.

हिंदी—मोतिया (बेला)। गुजराती-मोंगरो। मराठी-मोंगरा। बंगाली-मोतिया। कन्नड़-मल्लिगे। तामिल-अडुक्कु मल्लि।

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति भारत के सभी प्रांतों के उद्यानों में लगायी जाती है, किंतु उष्ण भागों में अधिक मात्रा में होती है।

पहचान—इसका पौधा एक झाड़ीदार गुल्म रूप में होता है। इसकी शाखाएँ पतली एवं नवीन शाखाएँ मृदरोमाच्छित होती हैं। इसके पत्ते विभिन्न आकार के, अंडाकार, पतले, चिकने, विपरीत पत्रदंड ३-६ मि० मी० लंबा तथा रोमश। इसके पुष्प श्वेत अत्यंत सुगंधित तीन पुष्प एक साथ रहते हैं। इसके पुष्प वर्षा ऋतु में आते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—इसके मूल, पत्र तथा पुष्प का प्रयोग किया जाता है।

वनस्पति के विविध भाग शोथहर, व्रणरोपण, स्तन्य नाशन एवं गर्भाशय उत्तेजक हैं।

प्रयोग—(१) प्रसूता के स्तन शोथ में—पुष्पों को पीसकर स्तन पर बाँधने से दुग्ध स्राव बंद होकर शोथ कम होता है।

(२) अनार्त्तव एवं अनियमितार्त्तव—इसके मूल को साफ कर तीन माशा प्रमाण में लेकर इसका क्वाथ बनाकर देने से लाभ होता है।

(३) रक्त प्रवाहिका में—इसके ३-४ पत्रों को पानी में पीसकर छान मिश्री मिलाकर २-३ बार प्रतिदिन देने से लाभ होता है।

(४) पुराने व्रणों पर—इसके पत्रों को पीसकर इस कल्फ का लेप व्रणों पर करने से लाभ होता है।

(५) पिचोटी उतरने के बाद—मोंगरे के पत्रों का रस गाय के दूध में पिलाने से लाभ होता है। वमन होने के बाद दूध एवं चावल का सेवन करना चाहिए।

मात्रा—मूल-तीन माशा। पत्र-तीन से चार।

(२२)

चक्रमर्द

Botanical Name : Cassia Tora Linn.
Family : CAESALPINACEAE.
English Name : Fetid cassia.

हिंदी—चकवड़ (पवांड़)

गुजराती-कुंवाडियो। मराठी-तरोटा। बंगाली-चकुंदा। कन्नड़-तगचे। तेलगू-तगिरिस। तामिल-उशिट्टगरै। पंजाबी-पंवार।

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति प्राय: सभी प्रदेशों में जंगली स्वरूप में अपने आप खेतों में, जंगलों में, सड़कों के किनारे, गंदे स्थानों में, कूड़ाकरकट में उगती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पहचान—यह पौधा एक वर्षायु, क्षुप स्वरूप का २-६ फुट ऊँचा एवं वर्षा ऋतु में अधिक मात्रा में सभी स्थानों पर उगता पाया जाता है। इसके पत्र संयुक्त पक्षाकार, इसके पत्रदंड पर पत्रक तीन जोड़ीयों में होते हैं, प्रत्येक पत्रक एक से दो ईंच लंबा, चिकना, हरे रंग का दुर्गंधयुक्त होता है। पत्र दंड के निचले पत्रों के जोड़ के बीच में एक काले रंग की ग्रंथि होती है। पत्र के अक्षकोण में दो-दो पुष्प जोड़ी में जो पीले रंग के होते हैं। इसके फल फलीरूप में प्रत्येक फली ४-८ इंच लंबी पतली एवं चौकोनी कुछ मुड़ी हुई किंतु फली का अग्र नुकीला होता है। इसकी फली में मेंथी के दाने जैसे बीज होते हैं।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—पत्र एवं पंचांग। इसके बीज दीपन, पाचन एवं बल्य होते हैं। इसके पत्र विरेचक, कृमिघ्न, ज्वरहर होते हैं।

प्रयोग—(१) दाद, खुजली एवं छाजन में—इसके बीजों को मूली के पत्रों के साथ पीसकर या नींबू के रस के साथ या करंज के तेल के साथ पीसकर रोग्रस्त भाग पर लगाने से लाभ होता है। जबकि छाजन में मट्ठे के साथ पीसकर लगाने से लाभ होता है।

(२) तंतुयुक्त गाँठों के लिए—कई बार व्रण वस्तु के स्थान पर इस तरह की गाँठें उत्पन्न होती हैं, इसके लिए चक्रमर्द के बीजों को सेहुन्ड के दूध में भिगोकर फिर गौमूत्र में पीसकर रोगग्रस्त भाग पर लेप करने से लाभ होता है।

(३) बच्चों के दंतोदभेद के समय ज्वर में—पत्रों का क्वाथ देने से लाभ होता है, यह मृदुरेचक होने के कारण लाभकारी होता है।

(४) फोड़ों पर—पत्रों का पोल्टीस बनाकर फोड़ों पर बाँधने से फोड़े जल्दी पक जाते हैं; इसके अतिरिक्त संधिवात तथा गृधसी पर पुल्टिस बाँधने से वेदना कम होती है।

(५) दुर्गंधयुक्त व्रण पर—इसके पत्रों को एरण्ड तेल में भूनकर पुल्टिस के रूप में बाँधने पर लाभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसके पत्रों का शाक गरीब लोगों में अति प्रचलित है। वर्षा ऋतु के १५ दिनों में इसका शाक बनाने लायक हो जाता है।

(६) पौष्टिकता के लिए—चक्रमर्द के मूल को धोकर सुखा लेना चाहिए, इस मूल का चूर्ण कपड़ छान के बाद बनाकर रख लेना चाहिए। प्रतिदिन प्रातः घी दो तोला, मिश्री का चूर्ण एक तोला तथा इसमें चार माशा मूल का चूर्ण मिलाकर इस मिश्रण में से एक तोला गरम कर चाटना चाहिए, इससे रक्त शुद्ध होकर बलवर्द्धक होता है।

(७) शीत ज्वर में—चक्रमर्द के मूल को सुखाकर पीसकर चूर्ण बनाने के बाद इस चूर्ण का प्रयोग घी में सेंक कर करने से शीत ज्वर में लाभ होता है।

मात्रा—बीज का चूर्ण : एक से दो माशा।

(२३)

जलब्राह्मी (जलनीम)

Botanical Name : Bacopa monnieri Linn.

Family : SCROPHULARIACEAE.

English Name : Bacopa.

हिंदी—जलनीम। गुजराती-कड़वीलुणी। मराठी-ब्राह्मी। बंगाली-ब्राह्मीशाक। तेलगू-शम्ब्रनी। तामिल-नीरा ब्रह्मी।

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति भारत के प्रायः सभी प्रदेशों में जल के समीप आर्द्र स्थानों में पायी जाती हैं। प्रायः यह भूमि प्रसरी होती है, किंतु कुछ शाखाएँ छोटी सीधी खड़ी रहती हैं।

पहचान—यह वनस्पति छोटी भू प्रसरी क्षुप रूप में पायी जाती है। यह प्रायः आर्द्र स्थानों में पानी से भरे छोटे-छोटे गड्ढों में पायी जाती है। अल्प प्रमाण में मांसल होती है। इसके पत्र अखंड वृंत रहित, अग्र भाग कुंठित, पत्रों पर सूक्ष्म काले चिन्ह होते हैं। इसकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लंबाई छः से पच्चीस मिमी० एवं चौड़ाई २.५ से १० मिमी० होती है। पुष्प श्वेत जामुनी या गुलाबी रंग के होते हैं। इसके फल अंडाकार चिकने तथा नुकीले होते हैं।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—इसके पंचांग का प्रयोग किया जाता है।

इसके पौधे का स्वाद कड़वा होने के साथ-साथ जल के समीप उगता है, इसलिए इसे जल नीम कहते हैं।

अल्पमात्रा में प्रयोग करने से अनैच्छिक माँस पेशियाँ जैसे आंत्र एवं गर्भाशय उत्तेजित होते हैं। हृदय को बल मिलता है, वातनाड़ी संस्थान के लिए बल्य, मूत्रल एवं विरेचक है। इसका प्रयोग स्वरभंग, अपस्मार तथा उन्माद में किया जाता है।

(२४)

पुदीना (पूतिहा)

Botanical Name : Mentha Spicata Linn.
Family : LAMIACEAE.
English Name : Spearmint.
हिंदी—पुदीना। गुजराती-पुदीनो।

प्राप्ति स्थान—यह पौधा पर्वतीय भागों में वन्य स्वरूप में पाया जाता है किंतु इसकी खेती की जाती है एवं बागों में लगाया जाता है।

पहचान—यह वनस्पति छोटी, क्षुप भू प्रसरी इसकी शाखाएँ पतली, लंबी जो जमीन पर भू प्रसरी होती हुई पर्व से मूल तथा नई शाखाएँ निकलती हैं। इसका कांड चौरस, पत्र गोल या अल्प प्रमाण में लंबे, खुरदरे, दंतुरित गहरे हरे रंग के, इसके पुष्प एक पतली मंजरी पर गठित तथा श्वेत-लालाश लिए होते हैं।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—पंचांग का प्रयोग किया जाता है। इसका पंचांग रुचिकर, हृद्य, मलमूत्र का स्तंभन करता है; कफ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाँसी, अग्निमांद्य, विसूचिका, संग्रहणी, अतिसार, जीर्ण ज्वर तथा कृमियों का नाश करता है।

प्रयोग—(१) शीत ज्वर, विषम ज्वर तथा सामान्य ज्वर में—इसके पंचांग का रस एवं अदरख के रस या दोनों का क्वाथ बनाकर देने से लाभ होता है।

(२) मोतीझरा (मधुरा) ज्वर में—पुदीने का पंचांग काली तुलसी तथा सफेद तुलसी का रस निकाल कर उसमें तीन माशा मिश्री का चूर्ण मिलाकर पीने से लाभ होता है।

(३) प्रतिश्याय (जुकाम) में—पत्रों का स्वरस एक-एक बूँद नासिकाओं में डालने से लाभ होता है।

(४) अतिसार में—पुदीने के पत्रों के साथ सूखे अनारदाने को पीसकर इसका स्वरस तथा सैंधव नमक मिलाकर दिन में तीन बार देने से लाभ होता है। इस मिश्रण को पतले कपड़े से छानकर सेवन करना उचित है।

(५) खाँसी में—पुदीने के पत्रों का स्वरस पीने से खाँसी में आराम मिलता है।

(६) उदरशूल में—पंचांग का स्वरस आधा तोला तथा इतना ही अदरख का रस एवं एक माशा सैंधव मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।

(७) बिच्छू के विष में—पुदीने का रस या इसके पत्रों को पानी में डालकर चवाकर खाने से लाभ होता है।

(८) रुचिकर चटनी—पुदीने के पत्र, छुआरा, कालीमिर्च, हींग, सैंधव नमक, काली किशमिश तथा जीरा इस सारे मिश्रण को पीसकर चटनी बनाकर इसमें नीबू का रस मिलाकर सेवन करने से अरुचि नाश होकर मुख में अच्छी मात्रा में लाल उत्पन्न होकर रुचि बढ़ाती है।

इसका प्रयोग कृमियों के नाश करने में भी किया जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(२५)

पत्थरचूर (पर्णबीज)

Botanical Name : Kalanchoe pinnata Pers/ Bryophyllum Calycinum. Salib

Family : CRASSULACEAE.

English Name : Life Plant.

हिंदी—पत्थरचूर (जखमहयात)

गुजराती-पानफूटी। बंगाली-कोपपाता। मराठी-घायमारी। कन्नड़-काडुसले।

प्राप्ति स्थान—यह वनस्पति भारत के प्राय: सभी उद्यानों में लगायी जाती है, किंतु दक्षिण बंगाल में अधिक मात्रा में पायी जाती है।

पहचान—यह वनस्पति बहुवर्षायु, मांसल रूप में क्षुप होती है, इसके पत्रों की दंतुरित गोल किनारी की खांच से पर्णरूप बीज (अंकुर प्ररोह) निकलते हैं। (प्रजनन कलियाँ) जिस से वंशवृद्धि होती है। इसका कांड पोला, लाल या हरा होता है, इसकी ऊँचाई ३-४ फीट होती है। इसके पत्र प्राय: दो तरह के होते हैं, नीचे (तल प्रदेश) के पत्ते साधारण जबकि ऊपर तरफ (अग्र भाग) के संयुक्त जिसमें पत्रकों की संख्या ३-६ या ७ होती है। प्रत्येक पत्रक विपरीत क्रम में जिसकी किनारी गोल दंतुर होती है। पत्रक मांसल एवं लटवाकर होते हैं। पुष्प बड़े नलिकार रक्ताभ हरित नीचे की ओर झुके हुए २-३ इंच लंबे होते हैं।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—पत्रों एवं इसके स्वरस का प्रयोग किया जाता है।

इसके पत्र व्रण रोपक, रक्तस्तंभक, इसका प्रयोग रक्तस्राव, चोट, अतिसार, अश्मरी तथा विसूचिका में किया जाता है। यह वनौषधि रक्तवाहिनीयों कोशिकाओं का संकोच करके रक्त का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहना रोकती है। इसलिए इसका प्रयोग बाह्य एवं आंतरिक दोनों तरफ से किया जाता है।

प्रयोग—(१) रक्तयुक्त अतिसार में—इसके पत्रों का स्वरस १/४-१/२ तोला, इसमें जीरा तथा दुगुने प्रमाण में घी मिलाकर सेवन करने से रक्तस्राव बंद होता है।

(२) चोट, मोच, व्रण, फोड़े तथा कीटदंश में—इसके पत्रों को थोड़ा सा गरम करके कूचकर रोगग्रस्त भाग पर बाँधने से सूजन, रक्तिमा तथा वेदना कम होकर लाभ होता है।

(३) घावों में—इसके पत्रों को थोड़ा-सा गरम करके, मसल कर घाव पर बाँधने से घाव जल्दी से भर जाते हैं एवं बाद में निशान तक नहीं रहते।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

(२६)
विधारा (घाव पत्ता)

Botanical Name : Argyreiaspeciosa Sweet.

Family : CONVOLVYLACEAE.

English Name : Elephant Creeper.

हिंदी—समुद्रशोख।

गुजराती-समुद्रशोष। मराठी-समुद्रशोक। बंगाली-विजताड़। तेलगू-समुद्रपाल। तामिल-समुद्रपच्चे।

प्राप्ति स्थान—इसकी बेल भारतवर्ष के प्राय: सभी प्रांतों में पायी जाती है। यह वन्य रूप उद्यानों में लगायी जाती है।

पहचान—यह वनस्पति बेलरूप में वृक्षों पर फैली हुई होती है। इसके नए अंग (कांड तथा पत्र) श्वेतरोम से आच्छादित, इसके पत्र बड़े लगभग ६-१२ इंच व्यास के, जो हृदयाकार तीक्ष्ण अग्र या कुंठित अग्र वाले, पत्रों की ऊपरी सतह चिकनी हरी जबकि अध:

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सतह मखमली श्वेत सघन रोम से आवरित होती है। पुष्प २-३ इंच बड़े गहरे जामुनी रंग के। इसके फल गोल-कच्चे हरे रंग के, पकने पर पीताभ भूरे रंग के।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—कांड, मूल, पत्र तथा नई लता के मूल का प्रयोग किया जाता है।

चिकित्सा में उपयोगी अंग—वीर्यवर्द्धक, मेधाशक्ति, जठराग्नि, आमवात, अर्श, शोथ, कफ तथा प्रमेह शामक है।

प्रयोग—(१) विबंध में—इसकी जड़ का चूर्ण ३-६ माशा जल के साथ देने से दस्त साफ होता है। यह पौष्टिक भी होता है।

(२) आमवात में—जड़ का चूर्ण लेने से लाभ होता है, इसके अतिरिक्त इसके पत्रों को पीसकर गरम करके संधिशोथ भाग पर बाँधने से लाभ होता है।

(३) व्रण शोथ पर—इसके पत्रों को थोड़ा गरम कर उलटा (रोमश वाली सतह) बाँधने से लाभ होता है।

(४) श्वेत प्रदर में—विधारा तथा अश्वगंधा का चूर्ण समभाग में (३ माशा) दूध के साथ सेवन से लाभ होता है।

मात्रा—मूल का चूर्ण-डेढ़ से तीन माशा।

(२७)
हल्दी (हरिद्रा)

Botanical Name : Curcuma Longa Linn.

Family : ZINGIBERACEAE.

English Name : Turmeric.

हिंदी—हल्दी। गुजराती-हलदर। मराठी-हलद। बंगाली-हलुद। पंजाबी-हलदी। कन्नड़-अरसिन। तेलगू-पसुपु। तामिल-मंजल। मलयालम-मंजल।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राप्ति स्थान—इसका रोपण भारत के लगभग सभी प्रांतों के खेतों में किया जाता है, किंतु इसकी खेती भारत के पश्चिम प्रांतों (महाराष्ट्र, गुजरात) दक्षिण प्रदेश (तमिलनाडु एवं बंगाल) में विशेष रूप से की जाती है।

पहचान—इसका पौधा २-३ फीट ऊँचा क्षुप प्रकार का होता है, इसके पत्ते लंबे १-२ फीट एवं ६-८ इंच चौड़े, पर्णवृंत भी लगभग १-२ फीट लंबा, पत्र भालाकार तथा पर्णतल तरफ से कुछ नुकीले केले के पत्र की तरह, पत्रों में आम के समान गंध आती है। पुष्प पीतवर्ण के थोड़ी संख्या में, पुष्प दंड लंबा, इसके नीचे अदरख के समान बड़े-बड़े कंद होते हैं, यह पीला होता है, इसी को हल्दी कहते हैं, यह भूमिगत कंदमूल एवं पर्णवृंतों के चिन्ह युक्त होते हैं। इसके अंदर का भाग पीला या नारंग पीत, इसकी गंध मधुर, स्वाद कड़वा, इसको सुखाकर प्रयोग करते हैं।

चिकित्सा में प्रयोज्य अंग—इसके भूमिगत कांड का प्रयोग किया जाता है।

भूमिगत कांड सुगंधित उत्तेजक, रक्तशोधक, शोथहर, दीपन, कफघ्न, वातहर गुण वाली एक उत्तम औषधि है।

इसका प्रयोग कफ विकार, यकृत विकार, रक्ताविकार, अतिसार, प्रतिश्याय, प्रमेह, कामला, एवं नेत्राभिष्यंद में किया जाता है।

प्रयोग विधि—(१) प्रतिश्याय, खाँसी, प्रमेह एवं प्रदर में—हल्दी का चूर्ण दूध में उबालकर एवं गुड़ मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

(२) खाँसी में—हल्दी को भूनकर इसका चूर्ण एक-दो माशा, मधु अथवा घृत के साथ चाटने से लाभ होता है।

(३) जुकाम (श्लेष्मा-प्रतिश्याय)—हल्दी के धुएँ को रात के समय सूँघते हैं, एवं उसके बाद कुछ देर तक पानी नहीं पीते, इससे जल्दी लाभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(४) प्रमेह में—हल्दी को आँवले के रस तथा मधु में मिलाकर सेवन करने से सभी प्रकार के प्रमेहों में लाभ होता है।

(५) प्रदर में—हल्दी का चूर्ण तथा गुग्गुल का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

(६) खुजली, दाद फोड़ा, रक्तविकार एवं चर्मरोगों में—हल्दी का चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन किया जाता है तथा हल्दी के चूर्ण को मक्खन में मिलाकर रोगग्रस्त भाग पर इसका लेप किया जाता है। हल्दी के साथ मिश्री मिलाकर सेवन करने से भी लाभ होता है।

(७) चोट, मोच, व्रण एवं पुराने घावों पर—हल्दी के साथ चूना मिलाकर इसका लेप करने से बहुत ही लाभ होता है।

(८) नेत्राभिष्यंद में—एक ग्राम हल्दी २५ मि०ली० पानी में उबालकर छान कर इसे आँख में बार-बार डालते हैं, आँख की वेदना कम हो जाती है, हल्दी के क्वाथ से रंग हुए कपड़े का प्रयोग नेत्राच्छादन के लिए किया जाता है।

(९) स्तन रोगों में—हल्दी का सूखा कंद एवं लोध्र पानी में घिस कर स्तन पर लेप करने से लाभ होता है।

(१०) कामला में—हल्दी का चूर्ण एक तोला, दही चार तोला में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

(११) विबंध—(मल बद्धता) बकरी के मूत्र में हल्दी का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

मात्रा :-चूर्ण दो से चार माशा।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org